

कक्षा 9 के लिए हिंदी की अधिगम-सामग्री (R3)

कबीर दास संत के कुछ प्रसिद्ध दोहे और उनके सरल अर्थ

1. बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।

जो दिल खोजा अपना, मुझसे बुरा न कोय॥

सरल अर्थ:

कबीर जी कहते हैं कि जब मैं दूसरों में बुराई देखने निकला, तो मुझे कोई बुरा नहीं मिला। लेकिन जब मैंने अपने मन के अंदर देखा, तो समझ आया कि मेरे अंदर ही बहुत सारी कमियाँ हैं।

सीख:

हमें हमेशा दूसरों की गलतियाँ देखने के बजाय पहले अपनी गलतियों को सुधारना चाहिए।

2. ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।

औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय॥

सरल अर्थ:

हमें हमेशा ऐसी मीठी और शांत भाषा बोलनी चाहिए जिससे सामने वाले को अच्छा लगे। हमारे शब्द दूसरों को भी खुशी दें और हमारे मन को भी शांति मिले।

सीख:

मीठे शब्द रिश्तों को मजबूत बनाते हैं। इसलिए बोलने से पहले अपने शब्दों के बारे में सोचना चाहिए।

3. धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।

माली सीखे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय॥

सरल अर्थ:

हर काम अपने सही समय पर होता है। जैसे माली पौधे को बहुत पानी देता है, लेकिन फल तभी आता है जब उसका सही मौसम आता है।

सीख:

हमें जीवन में धैर्य रखना चाहिए। मेहनत करते रहना चाहिए और परिणाम के लिए जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

4. काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।

पल में परलय होगी, बहुरि करेगा कब॥

सरल अर्थ:

जो काम कल करना है, उसे आज ही कर लेना चाहिए और जो काम आज करना है, उसे अभी कर लेना चाहिए। जीवन में समय कब खत्म हो जाए, इसका कोई भरोसा नहीं है।

सीख:

काम को बार-बार टालना सही नहीं है। समय का सही उपयोग करना चाहिए।

5. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जख्मे पेड़ खजूर।

पत्थी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥

सरल अर्थ:

केवल बड़ा या ऊँचा होना ही महत्वपूर्ण नहीं है। खजूर का पेड़ बहुत होता ऊँचा है, लेकिन वह राह चलते व्यक्ति को छाया नहीं देता और उसके फल भी बहुत दूर होते हैं।

सीख:

इंसान की महानता उसके पद, धन या ऊँचाई से नहीं, बल्कि इस बात से होती है कि वह दूसरों के कितने काम आता है।

6. माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।

कर का मनका ढार दे, मन का मनका फेर॥

सरल अर्थ:

हाथ में माला फेरते-फेरते बहुत समय बीत गया, लेकिन मन की सोच नहीं बदली। कबीर जी कहते हैं कि केवल हाथ से माला फेरने से कुछ नहीं होगा, हमें अपने मन को बदलना होगा।

सीख:

सच्ची भक्ति केवल बाहरी दिखावे में नहीं है। मन को साफ और अच्छा बनाना भी जरूरी है।

7. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पणित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पणित होय॥

सरल अर्थ:

बहुत सारी किताबें पढ़ लेने से ही कोई सच्चा ज्ञानी नहीं बन जाता। जो प्रेम का सही अर्थ समझ लेता है और अपने जीवन में प्रेम को अपनाता है, वही सच्चा ज्ञानी है।

सीख:

ज्ञान का असली महत्व तभी है जब वह हमारे व्यवहार और जीवन में दिखाई दे।

8. दुख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।

जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय॥

सरल अर्थ:

जब इंसान दुख में होता है, तब वह भगवान को याद करता है। लेकिन सुख के समय भगवान को भूल जाता है। कबीर जी कहते हैं कि अगर हम सुख के समय भी भगवान को याद करें, तो जीवन में दुखों का सामना करने की शक्ति मिलती है।

सीख:

भगवान को केवल परेशानी के समय नहीं, बल्कि हर समय याद करना चाहिए।

9. निदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।

बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय॥

सरल अर्थ:

जो व्यक्ति हमारी कमियाँ बताता है, उसे अपने पास रखना चाहिए। क्योंकि वह बिना साबुन और पानी के ही हमारी गलतियाँ दिखाकर हमारे स्वभाव को बेहतर बनाने में मदद करता है।

सीख:

हर आलोचना बुरी नहीं होती। जो व्यक्ति हमारी सही कमियाँ बताता है, उसकी बात से हमें सीख लेनी चाहिए।

10. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

सरल अर्थ:

किसी साधु या व्यक्ति की जाति देखकर उसका मूल्य नहीं समझना चाहिए।

उसके ज्ञान और गुणों को देखना चाहिए। जैसे तलवार की कीमत उसकी धार से होती है, उसकी म्यान से नहीं।

सीख:

किसी व्यक्ति को उसके जन्म या बाहरी पहचान से नहीं, बल्कि उसके ज्ञान, गुण और अच्छे व्यवहार से पहचानना चाहिए।

रहीम के दोहे

1.रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।

टूटे से फिर न मिले, मिले गाँठ परिजाय॥

अर्थ:रहीम कहते हैं कि प्रेम का रिश्ता बहुत नाजुक होता है। इसे झटके से या गुस्से में तोड़ना नहीं चाहिए। यदि प्रेम का धागा एक बार टूट जाए, तो यह दोबारा नहीं जुड़ता; और अगर जोड़ने की कोशिश की जाए, तो बीच में गाँठ पड़ जाती है।

2. रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।

पानी गए न ऊबर॥ मोती, मानुष, चून॥

अर्थ:रहीम कहते हैं कि जीवन में पानी का बहुत महत्व है। पानी के बिना सब सूना है। यहाँ पानी के तीन अर्थ हैं—मोती के लिए चमक, मनुष्य के लिए विनम्रता (इज्जत), और आटे (चून) के लिए जल। इनके बिना इनका कोई मूल्य नहीं रहता।

3. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसण।

चन्दन विष व्यापे नही॥ लिपटे रहत भुजण॥

अर्थ:जो लोग अच्छे स्वभाव (उत्तम प्रकृति) के होते हैं, उन पर बुरी संगति का कोई असर नहीं पड़ता। ठीक वैसे ही, जैसे जहरीले सांप चंदन के पेड़ से लिपटे रहते हैं, लेकिन चंदन पर विष का कोई प्रभाव नहीं होता।

4. तरुवर फल नहि॥ खात हैं, सरवर पियहि॥ न पान।

कहि रहीम परकाज हित, सप्रति सबहि सुजान॥

अर्थ:पेड़ अपने फल खुद नहीं खाते और तालाब अपना पानी खुद नहीं पीते। इसी प्रकार समझदार और अच्छे लोग (सुजान) अपनी संपत्ति का संचय दूसरों की भलाई (परोपकार) के लिए करते हैं।

5. बिगरी बात बने नही लाख करो किन कोय।

रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥

अर्थ: एक बार यदि कोई बात बिगड़ जाए, तो उसे फिर लाख कोशिश करने पर भी सुधारा नहीं जा सकता। जैसे यदि दूध एक बार फट जाए, तो उसे कितना भी मथने से मक्खन नहीं निकलता।

6. रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये ारि।

जहाँ काम आवे सुई, का कर तरवारि॥

अर्थ: बड़ी चीज़ या व्यक्ति को देखकर छोटी चीज़ या व्यक्ति का त्याग नहीं करना चाहिए। जहाँ पर एक छोटी सी सुई काम आती है, वहाँ तलवार कोई काम नहीं कर सकती।

7. रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार।

रहिमन फिरि-फिरि पोइय टूटे मुक्ता हार॥

अर्थ और भावार्थ: यदि कोई सज्जन (अच्छा व्यक्ति) आपसे रूठ जाए, तो उसे सौ बार भी मनाना पड़े तो मनाना चाहिए। जैसे मोती का हार टूट जाने पर मोतियों को बार-बार धागे में पिरो लिया जाता है, क्योंकि वे कीमती होते हैं।

8. कहि रहीम सप्तति सगे, बनत बहुत बहु रीत।

विपत्ति कसौटी जे कसे, तेई साचा मीत॥

अर्थ : जब आपके पास धन-संपत्ति होती है, तब कई लोग अलग-अलग तरीकों से अपने सगे-संबंधी और मित्र बन जाते हैं। सच्चा मित्र वही है, जो बुरे समय या विपत्ति के समय आपका साथ देता है।

9. जो रहीम ओछो बढ़े, तो अति ही इतराए।

प्यारौ भए न धूर्म धरे, छिन महुँ उड़ि जाइ॥

अर्थ: जब कोई नीच या ओछे स्वभाव का व्यक्ति धन या पद पाकर आगे बढ़ता है, तो वह बहुत घमं और इतराता है। वह कभी बादल की तरह भारी और उपकारी नहीं बन पाता, बल्कि धुएं की तरह थोड़ा सा उठकर पल भर में उड़ जाता है।

10. रहिमन जिहवा बावरी, कहि गइ सरग पताल।

आपु तौ भीतर रही, जूती खात कपाल॥

अर्थ: हमारी जीभ पगली (बावरी) होती है, जो कुछ भी अनाप-शनाप स्वर्ग और

पाताल की बातें (बढ़-चढ़कर) कह देती हैं। लेकिन जब बात पर आफत आती है, तो जीभ तो मुँह के अंदर सुरक्षित छिप जाती है और फजीहत या जूते सिर (कपाल) को खाने पड़ते हैं।

तुलसीदास के दोहे

1. तुलसी मीठे बचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।

बसीकरन इक मन्त्र हः परिहरु बचन कठोर॥

अर्थ: तुलसीदास जी कहते हैं कि मीठे और विनम्र वचन बोलने से चारों तरफ सुख और आनंद फैलता है। मीठी वाणी सबको वश में करने का एक अचूक मंत्र है, इसलिए मनुष्य को हमेशा कठोर वचनों का त्याग कर देना चाहिए।

2. दया धर्म का मूल हः पाप मूल अभिमान।

तुलसी दया न छाड़िए, जब लग घट में प्राण॥

अर्थ: तुलसीदास जी कहते हैं कि दूसरों पर दया करना ही समस्त धर्मों की जड़ (मूल) है, और घमं या अभिमान सभी प्रकार के पापों की जड़ है। इसलिए जब तक शरीर में प्राण हैं, तब तक मनुष्य को कभी भी दया का भाव नहीं छोड़ना चाहिए।

3. तुलसी काया खेत हः मनसा भयौ किसान।

पाप-पुन्य दोउ बीज हैं, बुवः सो लुनः निदान॥

अर्थ: तुलसीदास जी शरीर रूपी खेत के माध्यम से समझाते हैं कि हमारा मन इस खेत का किसान है। हमारे किए गए पाप और पुण्य दो तरह के बीज हैं; इंसान जैसा बीज बोता है, अंत में उसे वैसा ही फल (फसल) काटना पड़ता है।

4. तुलसी साथी विपत्ति के, विद्या, विनय, विवेक।

साहस, सुकृत, सुसत्य-व्रत, राम-भरोसा एक॥

अर्थ :तुलसीदास जी बताते हैं कि बुरे समय या विपत्ति में मनुष्य के सच्चे साथी ये सात गुण होते हैं—विद्या, विनम्रता, विवेक, साहस, अच्छे कर्म (सुकृत), सत्य का व्रत और भगवान श्रीराम पर अटूट भरोसा।

5. राम-नाम-मणि-दीप धरु, जीह देहरी द्वार।

तुलसी भीतर बाहिरौ, जौ चाहसि उजियार॥

अर्थ:तुलसीदास जी कहते हैं कि यदि आप अपने जीवन के भीतर और बाहर दोनों तरफ ज्ञान व आनंद का उजाला चाहते हैं, तो अपनी जीभ रूपी देहरी (द्वार) पर राम-नाम रूपी मणि (रत्न) का दीपक रख लीजिए।

6. तुलसी भरोसे राम के, निर्भय हो के सोए।

अनहोनी होनी नहीं॥होनी हो सो होए॥

अर्थ:तुलसीदास जी कहते हैं कि जो लोग भगवान राम पर पूर्ण भरोसा रखते हैं, वे जीवन में हर भय से मुक्त होकर निश्चिंत रहते हैं। संसार में जो अनहोनी है वह कभी नहीं होती और जो होनी (नियमित भाग्य में है) है, वह होकर ही रहती है।

7. आवत हिय हरष॥नहीं॥नखन नहीं॥सनेह।

तुलसी तहाँ न जाइए, कछन बरसे मेह॥

अर्थ और भावार्थ:तुलसीदास जी चेतावनी देते हैं कि जिस स्थान या घर में जाने पर लोगों के हृदय में हर्ष (खुशी) न हो और आँखों में आपके प्रति प्रेम व आदर

न दिखे, उस जगह पर कभी नहीं जाना चाहिए, भले ही वहाँ सोने की बारिश (कंचन बरसे मेह) ही क्यों न हो रही हो।

8. तुलसी इस सञ्चार में, भाति भाति के लोग।

सबसे हस मिल बोलिए, नदी नाव सजोग॥

अर्थ और भावार्थ: तुलसीदास जी कहते हैं कि इस संसार में तरह-तरह के स्वभाव वाले लोग रहते हैं। जिस प्रकार नदी और नाव का संयोग कुछ समय का होता है, उसी प्रकार सबको हँसकर और प्रेम से आपस में मिलकर बोलना चाहिए।

9 . कर्म प्रधान विस्व करि राखा।

जो जस करई, सो तस फलु चाखा॥

अर्थ और भावार्थ: तुलसीदास जी कहते हैं कि ईश्वर ने इस संपूर्ण विश्व को कर्म प्रधान बनाया है। यहाँ मनुष्य जैसा कर्म करता है, अंततः उसे वैसा ही उसका फल चखना (प्राप्त करना) पड़ता है।

कविता

पुष्प की अभिलाषा

कवि- माखनलाल चतुर्वेदी

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में
बिध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव
पर हे हरि, ढाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।

मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक

कविता का अर्थ और भावार्थ

इस कविता में माखनलाल चतुर्वेदी जी ने एक पुष्प (फूल) की इच्छा को बहुत ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है।

1. मोह का त्याग:

फूल कहता है कि उसे अप्सराओं के गहनों का हिस्सा बनने या प्रेमियों की माला बनकर किसी को रिझाने की कोई चाहत नहीं है।

2. अहंकार से मुक्ति:

वह राजाओं के शव पर चढ़ाए जाने या भगवान की मूर्ति पर सजकर अपने भाग्य पर गर्व करने की इच्छा भी नहीं रखता।

3. सर्वोच्च इच्छा:

अंत में, फूल वनमाली (माली) से विनती करता है कि उसे उस रास्ते पर फेंक दिया जाए जहाँ से देशभक्त और वीर जवान अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए गुजरते हैं।

2. हम पंछी उन्मुक्त गगन के

कवि-शिव मणाल सिंह 'सुमन'

हम पंछी उन्मुक्त गगन के पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर पुलकित पंख टूट जाएँगे।
हम बहता जल पीनेवाले मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहिं भली है कटुक निबोरी कनक-कटोरी की मैदा से।
स्वर्ण-शृंखला के बंधन में अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं तरु की फुनगी पर के झूले।
ऐसे थे अरमान कि उड़ते नील गगन की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल चुगते तारक-अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से इन पंखों की होड़-सी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता या तनती साँसों की षोरी।
नीं न दो, चाहे टहनी का आश्रय छिन्न-भिन्न कर ालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो आकुल उड़ान में विघ्न न ालो।

कविता का सार एवं भावार्थ

- **स्वतंत्रता का मूल्य:**शिव मंगल सिंह पक्षियों के माध्यम से कवि ने यह समझाया है कि गुलामी में रहकर सोने की सभी सुख-सुविधाएँ मिलने पर भी कोई खुशी नहीं मिलती।
- **खुला आसमान:**पक्षियों को सोने के पिंजरे से ज्यादा खुला आकाश, बहता हुआ पानी और कड़वी नीम की निबोरी पसंद है।
- **स्वतंत्र उड़ान:**पक्षी प्रार्थना करते हैं कि भले ही उनका घोंसला छीन लिया जाए, लेकिन उनकी स्वतंत्र उड़ान में बाधा न ाली जाए।

3.कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

कवि- सोहन लाल द्विवेदी

लहरों से ार कर नौका पार नहीं होती

कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है

चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है

चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती

कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

बकियाँ सिधु में गोताखोर लगाता ह
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता ह
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हशानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
असफलता एक चुनौती ह स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नीद चन्न को त्यागो तुम
सघर्ष का मदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

व्याकरण-भाग

1. भाषा

प्रश्न 1. भाषा किसे कहते हैं?

उत्तर - भाषा मानव के मुख से निकली सार्थक ध्वनियाँ हैं जिसके द्वारा हम अपने विचार बोलकर या लिखकर दूसरों पर प्रकट करते हैं।

प्रश्न 2. भाषा के कितने रूप होते हैं? नाम लिखकर उनके बारे में बताओ।

उत्तर -भाषा के दो रूप होते हैं-

(i) मौखिक (ii) लिखित

जब हम अपने विचार बोलकर प्रकट करते हैं व दूसरे उसे सुनकर समझते हैं तो इसे भाषा का मौखिक रूप कहते हैं। जब अपने विचार या भाव लिखकर प्रकट करते हैं और दूसरे उसे पढ़कर समझते हैं तो इसे भाषा का लिखित रूप कहते हैं।

प्रश्न 3. भाषा का अधिक पुराना रूप कौन-सा माना जाता है? क्यों ?

उत्तर- भाषा का मौखिक रूप अधिक पुराना माना जाता है क्योंकि मनुष्य ने पहले बोलना ही सीखा था।

प्रश्न 4. मानक हिंदी से क्या अभिप्राय है? इसका विकास किस बोली से हुआ है?

उत्तर- शिष्ट और सुशिक्षित लोगों द्वारा व्यवहार में लाया जाने वाला स्वीकृत भाषा का रूप 'मानक' भाषा कहलाता है।

हिंदी के मानक रूप का विकास खड़ी बोली से हुआ है।

प्रश्न 5. लिपि से क्या अभिप्राय है? इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी ?

उत्तर- भाषा की मूल ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने के उद्देश्य से जो विशेष चिह्न निश्चित किए जाते हैं, उन्हें 'लिपि' कहते हैं। सभ्यता के विकास तथा प्रसार के कारण लोग एक-दूसरे से बहुत दूर जाकर रहने लगे। एक-दूसरे से दूर इन लोगों को विचार-विनिमय की आवश्यकता अनुभव हुई। विचार-विनिमय को सहज, सरल तथा सुलभ बनाने के लिए ही 'लिपि' की आवश्यकता पड़ी। हिंदी भाषा की लिपि 'देवनागरी' है।

प्रश्न 6. ध्वनि और लिपि में क्या संबंध है?

उत्तर - ध्वनि और लिपि में घनिष्ठ सम्बन्ध है। किसी भाषा में अपने विचार बोलकर प्रकट करने के लिए हम कुछ निश्चित ध्वनियाँ प्रयोग करते हैं। उन निश्चित ध्वनियों को जब हम विशेष सङ्केतों या चिह्नों द्वारा लिखकर

प्रकट करते हैं तो वे लिपि चिह्न कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में, लिपि चिह्न मूल ध्वनियों के प्रतीक या सूचक होते हैं।

प्रश्न 7 बोली किसे कहते हैं? वह उपभाषा से कैसे भिन्न है?

उत्तर - किसी भाषा का क्षेत्र-विशेष में आने वाला स्थानीय रूप बोली कहलाता है। 'बोली' मात्र बोली जाती है। अर्थात् लिखित रूप में इसका प्रयोग नहीं होता। इसका क्षेत्र सीमित होता है।

'बोली' का शिष्ट रूप उपभाषा है। साहित्य की रचना होने पर बोली उपभाषा बन जाती है। इसका क्षेत्र बोली की अपेक्षा विस्तृत होता है।

2. वर्तनी की सामान्य अशुद्धियाँ और उनका शुद्ध रूप

प्रश्न 1. वर्तनी से क्या तात्पर्य है? शुद्ध वर्तनी के नियम बताइए।

उत्तर- 'वर्तनी' शब्द का अर्थ 'पीछे-पीछे चलना' है। लेखन-व्यवस्था में वर्तनी शब्द स्तर पर शब्द की ध्वनियों के पीछे-पीछे चलती है। वर्तनी शब्द विशेष के लेखन में उस शब्द की एक-एक करके आने वाली ध्वनियों के लिए लिपि चिह्न निर्धारित करती है। इस प्रकार उच्चारित शब्द के लेखन में प्रयोग होने वाले लिपि चिह्नों के व्यवस्थित रूप को वर्तनी कहते हैं। शुद्ध वर्तनी के नियम निम्नलिखित हैं-

(i) जिन व्यञ्जनों के अक्षर में खड़ी पाई जाती है, उन्हें जब दूसरे व्यञ्जन के साथ जोड़ते हैं तो यह हटा दी जाती है। जसो-तथ्य में 'थ' को 'थ्' के रूप में प्रयोग किया है।

(ii) स्वर रहित पञ्चमाक्षर जब अपने वर्ग के व्यञ्जन के पहले आता है तो उसे अनुस्वार के रूप में लिखा जाता है जज्ञे-पक्कज, द, पञ्जाब, प्रारक्ष।

(iii) जब किसी शब्द में श, ष, स में से सभी अथवा दो का एक साथ प्रयोग हो तो उनका प्रयोग वर्णमाला क्रम से होता है जज्ञे-शासन, शेषनाग।

(iv) जब कोई पञ्चमाक्षर अन्य पञ्चमाक्षर के साथ सयुक्त होता है तो पञ्चमाक्षर ही लिखा जाता है जज्ञे-जन्म, निम्न, अन्न।

(v) यदि य, व, ह के पहले पञ्चमाक्षर हो तो वहाँ पञ्चमाक्षर ही लिखा जाता है जज्ञे-पुण्य, कन्हैया, अन्य।

(vi) जब य, र, ल, व और श, ष, स, ह से पहले 'सम्' उपसर्ग लगता है तो वहाँ 'म्' के स्थान पर अनुस्वार लगता है जज्ञे-सम् वाद सखाद, सम् सार सखार।

(vii) जब किसी शब्द के अन्त में 'ई' अथवा इसकी मात्रा 'ी' हो तो उस शब्द का बहुवचन बनाते समय 'ई' का 'इ' अथवा 'i' हो जाता है जज्ञे दवाई दवाईयाँ, लड़की लड़कियाँ।

(viii) जब किसी शब्द के अन्त में 'ऊ' अथवा उस की मात्रा हो तो बहुवचन बनाते समय उसका 'उ' अथवा उ की मात्रा हो जाती है जज्ञे-

लट्टू = लट्टुओ, आलू = आलुओ

प्रश्न 2. वर्तनी सङ्घी अशुद्धियों से बचने के लिए किन बातों का विशेष ध्यान आवश्यक है?

उत्तर - वर्तनी सङ्घी अशुद्धियों से बचने के लिए शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना चाहिए क्योंकि शब्दों में ध्वनियों की एक निश्चित व्यवस्था होती है। इस व्यवस्था के अनुसार लिखने से वर्तनी की अशुद्धियाँ नहीं होती हैं। शब्दों के मानक रूपों का प्रयोग करना चाहिए।

प्रश्न 3. अनुस्वार और अनुनासिक रूपों के पाँच-पाँच शब्द लिखिए।

उत्तर- अनुस्वार- गङ्गा, पङ्कज, चपक, पङ्कित, पङ्गाब।

अनुनासिक- आँख, साँस, हँसमुख, फाँस, सँवारना।

प्रश्न 8 भाषा सीखने में व्याकरण से क्या सहायता मिलती है?

जिस शास्त्र के द्वारा हम भाषा को शुद्ध, लिखना, बोलना व पढ़ना सीखते हैं अथवा जो किसी भाषा के लिखित एवं मौखिक रूपों का शुद्ध ज्ञान कराता है उसे व्याकरण कहते हैं। व्याकरण के ज्ञान के बिना न तो किसी भाषा को ठीक ढ़ा से पढ़ा जा सकता है और न ही उसे शुद्ध रूप में लिखा जा सकता है। अतः भाषा का शुद्ध, स्पष्ट और साहित्यिक रूप जानने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।

प्रश्न 9. व्याकरण के कितने अंश हैं? विवेचन कीजिए।

हिंदी व्याकरण के मुख्य चार विभाग हैं-

(i) वर्ण-व्यवस्था (ii) शब्द-व्यवस्था

(iii) पद-व्यवस्था

(iv) वाक्य-व्यवस्था।

(i) वर्ण-व्यवस्था-व्याकरण का वह भाग है जिसमें वर्णों के आकार, भेद, उच्चारण स्थान तथा उनके मेल से शब्द बनाने के नियमों पर विचार किया जाता है।

(ii) शब्द-व्यवस्था-व्याकरण का वह भाग है जिसके अंतर्गत शब्दों के निर्माण, भेद, रूप, परिवर्तन, व्युत्पत्ति आदि विषयों पर विचार किया जाता है।

(iii) पद-व्यवस्था-व्याकरण के इस भाग में पद तथा उसके भेदों तथा रचना का अध्ययन किया जाता है।

(iv) वाक्य-व्यवस्था-व्याकरण के इस भाग में वाक्यों की रचना या सञ्गठन, वाक्यों के भेद तथा लक्षण, वाक्य विश्लेषण और विराम चिह्नों पर विचार किया जाता है।

प्रश्न 10. लिपि और व्याकरण में संबंध बताओ।

उत्तर - लिपि भाषा की आधारशिला है और व्याकरण भाषा में नियमबद्धता लाता है। लिपि भाषा के मौखिक रूप को चिरकाल तक सुरक्षित रखती है तो व्याकरण भाषा को शुद्ध रूप प्रदान करता है। इस प्रकार लिपि और व्याकरण के सामूहिक संयोग से भाषा में स्थिरता आती है।

प्रश्न 11. हिंदी भाषी प्रदेशों में कौन-कौन सी बोलियों या उपभाषाएँ बोली जाती हैं?

उत्तर - हिंदी भाषी प्रदेशों में 18 बोलियाँ (उपभाषाएँ) बोली जाती हैं। इन्हें क्षेत्रीय दृष्टि से निम्नलिखित पाँच वर्गों में बाँटा गया है।

उत्तर -

(i) पश्चिमीहिंदी-ब्रजभाषा, खड़ी बोली, हरियाणवी, बुंदेली और कन्नौजी।

(ii) पूर्वी हिंदी- अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी।

(iii) बिहारी हिंदी- भोजपुरी, मगही, अगिका, और मथिली।

(iv) राजस्थानी - मारवाड़ी, जयपुरी, जोधपुरी, मेवाड़ी और हाड़ौती।

(v) पहाड़ी-हिमाचली, कुमाँनी मणियाली और गढ़वाली।

प्रश्न 12. किन बाइस भाषाओं को संविधान में मान्यता प्रदान की गई?

असमिया, उड़िया, कन्नड़, उर्दू, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगू, पंजाबी, बांग्ला, मराठी

संस्कृत, सिंधी, मणिपुरी, नेपाली, कोकणी, बोडो, मलयालम, मथिली, ओगरी, संथाली, हिंदी

प्रश्न 13. साहित्य किसे कहते हैं? इसके कितने प्रकार होते हैं?

उत्तर- युगों-युगों से एकत्रित ज्ञान के भण्डार को साहित्य कहते हैं। साहित्य दो प्रकार के होते हैं-

1. गद्य साहित्य 2. पद्य साहित्य

प्रश्न 14. राजभाषा किसे कहते हैं?

उत्तर- राजभाषा का अर्थ है राज-काज की भाषा अर्थात् जिस भाषा का देश के कार्यालयों में राज-काज के लिए प्रयोग किया जाता है उसे राजभाषा कहते हैं।

प्रश्न 15. हिंदी को राष्ट्रभाषा कब घोषित किया गया?

उत्तर 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया।

.....X.....